विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग-अष्टम्

विषय -हिन्दी

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपकी हिंदी पाठ्य पुस्तक के पाठ-5 'सोना' को दिया जा रहा है । साथ ही साथ लेखिका का जीवन परिचय और कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए जा रहे हैं ।

निर्देश- कहानी वाला पृष्ठ को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा शब्दार्थ को याद करतथा शब्दार्थ को याद करें ।

जीवन परिचय

श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में हुआ था। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में सुंदर रचनाएँ की हैं। स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, मेरा परिवार इनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं। नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा, सांध्यगीत आदि उनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। इनका देहावसान सन् 1987 ई० में हुआ।

शब्दार्थ

संबद्ध	-	जुड़ा हुआ	अनिर्वचनीय	-	अकथनीय
शैशवावस्था	-	बचपन	अभिव्यक्ति	-	मन की बात प्रकट करना
प्रसुप्त	-	सोई हुयी	सख्य	-	दोस्ती
रोमंथन	-	जुगाली, पागुर	तन्मय	-	मग्न
सद्यःप्रसूता	-	उसी समय जन्म देने वाली	पीताभ	-	पीले
मुमूर्ष अवस्था	-	मृतप्राय, मूर्च्छित	बंकिम	-	टेढ़ा, तिरछा
अवांछित	-	जिसकी चाह न हो	स्निग्धता	-	चिकनापन
कौतुक	-	उत्सुकता	स्फुरण	-	संचरण
कर्म संकुलता	-	कामों की भीड़	आश्वस्त	-	निश्चिंत

अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्द :

डॉ०, ग्लूकोज, कंपाउंड, मेस बिस्कुट, बल्ब

5 सोना

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डॉ० धीरेन्द्र नाथ वसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है, "गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं परंतु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी क्योंकि आप जानती हैं कि मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली-भाँति देखभाल हो सकेगी।"

कई वर्ष पहले मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी; परंतु आज उस नियम को भंग किए बिना इस कोमल प्राण-जीव की रक्षा संभव नहीं है।

सोना इसी प्रकार अचानक आयी थी परंतु वह अब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग का, रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती तो लगता था कि अभी छलक पड़ेगी। लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही प्रसुप्त गति की बिजली की लहर देखने वालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल, शिशु रूप से बहुत प्रभावित हुए।

परंतु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजन प्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी।